बुनियादी बातों से शुरुआत करना

हम कलीसिया में लीडरशिप के बारे में अध्ययन शुरू कर रहे हैं, इसलिए पहले हमें यह पता होना आवश्यक है कि लीडरशिप की ''विशेषताएं'' ज़्या हैं। लीडरशिप ज़्या है ? एक लीडर या अगुआ कैसे बनता है ? उसे अगुआ कौन बनाता है ?

लीडरशिप ज़्या है ?

लीडरशिप की परिभाषा देना आसान नहीं है। हमें लगता है कि जैसे रैटलस्नेक (एक विषैला सांप जिसके चलने से पज़ों में भी खन खन की आवाज आती है) को देखकर पता चल जाता है कि वह कैसा है, वैसे ही हम देखकर कह सकते हैं कि लीडरशिप ज़्या होती है, परन्तु लीडरशिप की परिभाषा देना रैटलस्नेक के बारे में बताने से कठिन है।

हम जानते हैं कि यीशु एक लीडर अर्थात अगुआ था ज़्योंकि उसके चेले उसका अनुसरण करते थे। मूसा एक अगुआ था ज़्योंकि वह इस्राएलियों को मिसर से निकालकर जंगल में से होते हुए कनान की सीमा तक ले गया था। नहेमायाह एक अगुआ या लीडर था ज़्योंकि उसने यरूशलेम की दीवारों को फिर से बनाने के लिए इस्राएलियों को निर्देश दिया था। ज़्या इन लोगों की विशेषताओं को मिलाकर (निश्चय ही, यीशु एक साधारण मनुष्य से बढ़कर था) लीडरशिप की परिभाषा मिल जाती है।

प्रसिद्ध नेताओं या लीडरों के बारे में विचार करने पर हमारे ध्यान में जॉर्ज वाशिंगटन, अब्राहम लिंकन, फ्रेंकलिन रूसवेल्ट और बापू गांधी जैसे बड़े राजनेताओं के नाम आते हैं। परन्तु लीडर तो अच्छी और बुरी किसी भी दिशा में अगुआई कर सकता है। यीशु एक लीडर था, तो मुहज़्मद जिम जोन्स और वरनोन हॉविल (डेविड कोरेश) भी सज़्प्रदायों के लीडर या अगुवे थे।

किसी धावक को ''टीम लीडर'' माना जा सकता है। हो सकता है कि वह टीम का कैप्टन न हो या टीम का सबसे अच्छा खिलाड़ी न हो; परन्तु वह खेलता है और टीम के प्रत्येक खिलाड़ी के अच्छा खेलने के कारण टीम की जीत होती है; दूसरी ओर कई बार कोई टीम लड़खड़ाती हुई लगती है, ज़्योंकि हमारी समझ से उसमें ''लीडर'' या अगुआई देने वाला ''नहीं'' है।

हम जानते हैं कि कौन लीडर नहीं होता। हमने एक व्यज़्ति के बारे में सुना है जो

हांफता हुआ गांव की दुकान पर जाकर दुकानदार से कहने लगा, ''ज़्या कोई आधा घण्टा पहले इधर से तीस लोगों का एक झुंड निकला था?'' ''हां'' दुकानदार का उज़र था। वह आदमी कहने लगा ''वे किधर गए हैं? मैं उन्हें ढूंढ़ रहा हूं ज़्योंकि मैं उनका लीडर हूं।'' हम जानते हैं कि वह आदमी उनका लीडर नहीं हो सकता, तो फिर लीडर या अगुआ ज़्या होता है? लीडरशिप ज़्या होती है?

अलग - अलग परिभाषाएं

लीडरशिप की परिभाषा कई तरह से दी गई है। शज़्दकोश के अनुसार लीडर वह व्यज़्ति होता है जो ''किसी समूह या कार्य का निर्देशन करने, आज्ञा देने या अगुआई करने में मुज़्य'' हो। लीडरशिप की परिभाषाएं लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें पूरा करने के लिए ''एक संगठित समूह की गतिविधियों को प्रभावित करने की प्रक्रिया'' से लेकर दूसरों के व्यवहार को अगुआई देने या उन्हें नियन्त्रित करने, दूसरों को प्रेरणा देने तक दी जाती हैं।[1]

लीडरशिप की और भी कई परिभाषाएं हो सकती हैं। अलग-अलग परिभाषाओं की समीक्षा करने के बाद, कैनथ ओ. गेंगेल ने अपनी खोज को इस प्रकार संक्षिप्त किया है,

> ... लीडरशिप एक *गुण* है; लीडरशिप *दूसरे लोगों के साथ काम करने* और *किसी लक्ष्य की ओर बढ़ने* को कहा जाता है। यदि इस पुस्तक के क्षेत्र के लिए माननीय परिभाषा में ये तीन बातें होतीं, तो यह इस प्रकार लग सकती थी: *लीडरशिप किसी समूह के कुछ विशेष गुणों, चरित्र तथा योग्यता वाले एक सदस्य का व्यवहार है जो किसी समय परस्पर सहमति से लक्ष्यों की ओर पूरे समूह के व्यवहार को बदल देता है।*[2]

बहुत बार, लीडरशिप की परिभाषाओं में एक विशेष प्रकार की लीडरशिप अर्थात राजनीतिक नेताओं के नेतृत्व को मान लिया जाता है। इसके विपरीत, हम इस शज़्द की ऐसी परिभाषा चाहते हैं जिसमें हर प्रकार का नेतृत्व शामिल हो।

हमारी परिभाषा

फिर हमारी परिभाषा के अनुसार लीडरशिप या नेतृत्व *पहले से ठहराए गए लक्ष्य या उद्देश्य को पूरा करने के लिए समझदारी तथा विवेक से निजी लोगों या किसी समूह की अगुआई करने को कहा जाता है।* इन पाठों में हम ऐसे नेतृत्व या लीडरशिप पर ही विचार करेंगे।

इस परिभाषा का हर भाग महत्वपूर्ण है। पहले तो, जैसा कि हम इसकी परिभाषा दे रहे हैं, लीडरशिप ''समझ से और विवेक से'' होती है। इसका अर्थ यह है कि किसी की अगुआई ''अकस्मात'' या ''अचेत'' नहीं होती। जैसे कि कई बार लीडरशिप की परिभाषा दी जाती है, इसका अर्थ है अच्छाई या बुराई के लिए ''दूसरों को प्रभावित करना।'' बेशक, दोनों में से प्रत्येक क्षेत्र में लोग किसी के नेतृत्व या अगुआई में ही काम करते हैं। हम सब अपने जीवन, व्यवहार, बातों तथा आचरण से दूसरों को प्रभावित करते हैं। परन्तु इससे ''लीडरशिप'' का वह

अर्थ जिसका हम इन पाठों में इस्तेमाल कर रहे हैं, समाप्त नहीं हो जाता।

दूसरी बात, लीडरशिप ''निजी लोगों या किसी समूह की अगुआई'' करने को कहा जाता है। लोगों के बिना लीडर या अगुआई करने वाला नहीं हो सकता। परिभाषा से ही, लीडरशिप के लिए दूसरों की अगुआई करने वाले का निर्देशन मिलना आवश्यक है। लीडर या अगुआ उसे ही कहा जा सकता है जिसके पीछे लोग चलते हों।

तीसरी बात, लीडरशिप ''पहले से ठहराए हुए लक्ष्य या उद्देश्य को पूरा करने के लिए'' एक समूह की अगुआई करना है। लीडरशिप का अर्थ ही कोई बड़ा उद्देश्य या लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दूसरों को काम में लगाना है। वह लक्ष्य लीडर या अगुओं के मन में तो होता है, लेकिन ज़रूरी नहीं कि उन लोगों के मन में भी हो (विशेषकर पहले) जिनकी वह अगुआई करता है।

यह परिभाषा इतनी व्यापक है कि इसमें हर प्रकार के नेतृत्व को शामिल किया जा सकता है। एक बॉस अपने कर्मचारियों को एक लक्ष्य पूरा करने में अगुआई देता है, चाहे वह लक्ष्य उसके लिए और ज्यादा धन कमाना ही ज़्यों न हो। वह उनसे यह काम वेतन देकर और जब वे काम पर न जा पाएं तो उनका वेतन काटकर करवाता है। इस परिभाषा के अनुसार यह भी लीडरशिप की एक किस्म है। बैंक में डाका डालने वाला व्यज़्ति बन्दूक की नोक पर दूसरों को खज़ाना खोलने के लिए कहता है ताकि वह उसमें से धन चुरा सके। यह भी एक प्रकार की लीडरशिप है।

कलीसिया के, लीडरों या अगुओं में बॉस और बैंक में डाका डालने वाले व्यज़्ति जैसी कुछ समानता है। वे भी लोगों को कुछ करने के लिए, लीड करने, अगुआई देने या निर्देशन देने की कोशिश कर रहे हैं। कलीसिया के तथा दूसरे लीडरों में अन्तर ''लीडरशिप'' शज़्द के अर्थ के अन्तर्गत नहीं बल्कि *निर्धारित लक्ष्य तथा अगुआई करने में इस्तेमाल किए ढंगों में* है।

लीडरशिप कहां से आती है?

कोई व्यज़्ति लीडर कैसे बनता है? इस प्रश्न का उज़र देने से पहले, हमें इससे जुड़े दो प्रश्नों पर विचार करना चाहिए।

दो प्रश्न

ज़्या लीडर कोई भी बन सकता है? किसी का कहना है कि हां हर कोई लीडर होता है। बेशक एक सीमित अर्थ में यह बात सही है (लीडरशिप किसी की परिभाषा पर निर्भर है)। हर किसी का किसी न किसी क्षेत्र में प्रभाव होता है और उससे दूसरों को कुछ न कुछ दिशा मिलती ही है। अज़्सर इस प्रकार की लीडरशिप अचेत होती है। अर्थात लोगों को इस बात का ध्यान नहीं होता कि वे किसी की अगुआई कर रहे हैं या कोई उनका लीडर है। निश्चय ही, मसीही लोगों को अपने प्रभाव की जानकारी हो सकती है, जो कि उन्हें होनी भी चाहिए और वे लोगों को स्वर्ग की ओर ले जाने व समझ से अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हैं और इसकी इच्छा भी करनी चाहिए।

हर व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति में लीडर नहीं होता। यदि ऐसा होता, तो ''लीडर'' और ''लीडरशिप'' शब्दों का कोई अर्थ ही नहीं रहता।

ज़्या कोई जन्म से ही लीडर या अगुआ होता है या उसे बनाया जाता है? एक अर्थ में, लीडर ''पैदा'' होते हैं, ऐसा होने पर कम से कम उनका जन्म और नेतृत्व के लिए उनके प्रारंभिक अनुभव विशेष रूप से उन्हें योग्य ठहराते हैं। हम सभी ने ऐसे लोग देखे होंगे जिन्हें ''करिश्माई'' नेता कहा जाता है ज़्योंकि लोग खुद - ब - खुद उनके पीछे चल पड़ते हैं। बिना कठिन प्रयास किए वे अपने इर्द - गिर्द अपने प्रशंसकों या अनुयायियों की भीड़ जमा कर लेते हैं। वे किसी पद के लिए चुने जाएं या कंपनियों के अध्यक्ष बन जाएं, लोग अगुआई तथा निर्देशन के लिए उनकी बात मानते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ लोगों में अपनी इच्छा से दूसरों को अपने पीछे चलाने का गुण जन्म से ही होता है और वे किसी भी कार्य को करने के लिए बड़े प्रभावी ढंग से लोगों को अपने साथ ले सकते हैं।

नये नियम के समयों में ''जन्म से अगुआ'' होने का अच्छा उदाहरण शाऊल था, जो बाद में पौलुस प्रेरित कहलाया। यहूदी धर्म का यह अगुआ अर्थात लीडर (फिलिप्पियों 3:4-7) परमेश्वर के अनुग्रह से अपने मन परिवर्तन के बाद मसीही धर्म का एक अगुआ बन गया था। पौलुस में किसी भी संगठन या समूह का अगुआ बनने का स्वाभाविक गुण था।

दूसरी ओर, ऐसा लगता है कि कई बार वे लोग जिनमें लीडरशिप (नेतृत्व) के गुण नहीं होते उन्हें परिस्थितियों के कारण अगुआई करनी पड़ती है। मैंने मण्डलियों में ऐसे लोगों को देखा है जो न तो जन्म से लीडर थे और न ही उन्होंने अगुआई करने की कोई शिक्षा पाई थी, लेकिन उनके पास अगुआई करने के अलावा कोई चारा नहीं था। (हो सकता है कि हम कलीसिया के ऐसे अगुओं के प्रति कुछ अधिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखते हों।)

यदि लीडर बनने पर लोगों में उस कार्य को करने की अच्छी क्षमता आ सकती है, तो इसका अर्थ यह है कि कोई भी व्यक्ति अगुआई करने के उस कार्य को प्रभावशाली ढंग से करना सीख सकता है। इस अर्थ में, लीडर ''बनाए'' जा सकते हैं।

लीडरशिप परमेश्वर से मिले दान के रूप में

लीडरशिप का वास्तविक स्रोत परमेश्वर ही है! नये नियम की इस शिक्षा पर हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि लीडरशिप या अगुआई करना परमेश्वर की ओर से मिला एक दान है। बाइबल लिखे जाने के समय, परमेश्वर ने अगुओं को अपने लोगों के लिए चुनकर बुलाया और उन्हें आज्ञा दी। उसने उन अगुओं को सामर्थ भी दी थी। उसने ऐसी सामग्री का इस्तेमाल किया जो निराशाजनक थी। मूसा ने पहले ही लोगों की अगुआई करने की कोशिश की थी और नाकाम रहा था; गिदोन न्यायी बनने को तैयार नहीं था; दाऊद अपने पिता के आठ लड़कों में सबसे छोटा था, और बाकी सब उससे अधिक प्रभावशाली लगते थे; प्रेरितों को अगुआई के लिए बुलाने की बात पर विश्वास न करने वाले लोग उन्हें गंवार गलीली समझते थे। ये सब लोग महान अगुवे बने, ज़्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अगुआई करने की योग्यता दी

थी। बेशक आज परमेश्वर इस काम को आश्चर्यकर्म से नहीं कर रहा है, लेकिन आज भी वह कलीसिया में लोगों को लीडर अर्थात अगुवे बना रहा है।

तीन आयतों से पता चलता है कि नये नियम के समयों में लीडरशिप को दान के रूप में माना जाता था। पहले, हम पढ़ते हैं, ''और उसने कितनों को प्रेरित नियुज़्त करके, और कितनों को भविष्यवज़्ता नियुज़्त करके, और कितनों को *सुसमाचार सुनाने वाले* नियुज़्त करके, और कितनों को *रखवाले* और उपदेशक नियुज़्त करके दे दिया। जिससे ... सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए'' (इफिसियों 4:11, 12)। फिर हम रोमियों 12:6-8 में पढ़ते हैं, ''उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न -भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिस को भविष्यवाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिणाम के अनुसार भविष्यवाणी करे। यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखाने वाला हो, तो सिखाने में लगा रहे। जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देने वाला उदारता से दे, जो *अगुआई करे,* वह *उत्साह से करे* ''। *द न्यू टैस्टामेंट फ्रॉम 26 ट्रांसलेशन्स* में दिए गए अनुवादों में इसका अनुवाद इस प्रकार मिलता है: ''जो शासन करता ...'' (Con); ''जिसे अधिकार मिला है ...'' (TCNT); ''जो प्रधान है ...'' (Wey); ''यदि आप अगुवे हैं ...'' (NEB). NIV में इसका अनुवाद ''यदि यह अगुआई करने की बात है ...'' मिलता है। तीसरा, 1 कुरिन्थियों 12:28 में पौलुस लिखता है, ''और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग - अलग व्यज़्ति नियुज़्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यवज़्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करने वाले, फिर चंगा करने वाले, और उपकार करने वाले, और *प्रधान,* ...।'' *द न्यू टैस्टामेंट फ्रॉम 26 ट्रांसलेशन्स* के अनुसार, ''प्रधान'' की जगह अन्य संस्करणों में ''governments'' (KJV) ''प्रबन्धक'' (Phi), ''उनकी अगुआई करने वाला सामर्थ'' (NEB), ''समझदार अगुवे'' (Bas), ''जो दूसरों को साथ लेकर काम करवा सकें'' (Tay), या ''प्रबन्धक'' (Beck) का इस्तेमाल करते हैं। NIV के अनुवाद के अनुसार ''प्रबन्धन का दान'' और NRSV ''लीडरशिप की किस्में'' हैं।

आज लीडरशिप को एक दान के रूप में कैसे समझा जा सकता है? हो सकता है कि अगुवे अपने आपको दूसरों से भी बढ़कर, ''स्वयं बने लोग'' समझने लगें। उनके मन में आ सकता है, ''मैंने काम किया। मैं पढ़ा लिखा हूं। मैं लोगों में इतनी देर से रह रहा हूं और मैंने उनके लिए इतने बड़े - बड़े काम किए हैं। मुझे सज़्मान मिलना ही चाहिए और लोगों को मेरी बात माननी ही चाहिए। कोई कैसे कह सकता है कि लोगों की अगुआई करना मेरे लिए दान है?'' कई प्रकार के विचारों से हमें यह समझने में सहायता मिल सकती है कि लीडरशिप वास्तव में एक दान या परमेश्वर की ओर से दिया गया तोड़ा है।

एक तरफ़ तो, यदि लीडर बनाए नहीं जाते पैदा ही होते हैं (या बनाए जाने से *अधिक* जन्म से लीडर होते हैं), तो कलीसिया के अगुओं को यह बात याद रखनी चाहिए कि हर अच्छा और उज़म दान परमेश्वर की ओर से ही आता है (याकूब 1:17)। संसार में आने के लिए उन्होंने अपने माता - पिता को नहीं चुना था, न ही अपने स्वाभाविक गुणों के लिए वे ज़िज़्मेदार हैं। यदि कोई लज़्बा, ताकतवर, दिखने में सुन्दर, समझदार और ''जन्म से ही

स्वाभाविक लीडर'' है, तो उसे डींग नहीं मारनी चाहिए। मानवीय दृष्टिकोण से उसे अच्छे माता-पिता मिले हैं। परमेश्वर के दृष्टिकोण से उसे यह अहसास होना चाहिए कि परमेश्वर ने उसे ऐसे गुणों के साथ जन्म लेने के योग्य बनाया; महिमा परमेश्वर को ही दी जानी चाहिए! पौलुस ने जो निश्चय ही एक स्वाभाविक लीडर था, माना कि उसे ये गुण परमेश्वर की ओर से ही मिले थे। उसने कहा, ''यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था'' (1 कुरिन्थियों 15:10)।

दूसरी ओर यदि लीडर पैदा नहीं होते बल्कि बनाए जाते हैं, तो भी हमें याद रखना चाहिए कि जीवन की हर अच्छी चीज़ परमेश्वर की ओर से ही आती है। *जिन परिस्थितियों ने लोगों को लीडर बनाया और वे सफल हो पाए उन सबका श्रेय अन्ततः परमेश्वर को ही जाता है।* कोई आपज़ि कर सकता है कि, ''मैंने कठिन परिश्रम करके अध्ययन किया,'' परन्तु उसमें काम करने और अध्ययन करने की इच्छा कहां से आई? माता - पिता से या दादा-दादी से? किसी मित्र या पड़ोसी से? किसी शिक्षक से? ''अपने बूते'' सफल होने वाला उस व्यज़ि को स्मरण कर सकता है जिसने उसे बुलन्दी तक पहुंचाने के लिए प्रेरणा के रूप में एक बड़ी भूमिका निभाई। उसे वह व्यज़ि कहां से मिला? परमेश्वर की ओर से! यदि परमेश्वर उसकी सफलता के लिए परिस्थितियां उत्पन्न न करता, तो वह सफल नहीं हो सकता था!

उदाहरण के लिए, एक ऐल्डर बनने की योग्यताओं पर विचार करें। ऐल्डर बनने के लिए सबसे पहला गुण मसीही होना है। ज़्या वह एक मसीही बनने का अवसर देने के लिए परमेश्वर का ऋणी नहीं है? उसे न केवल उद्धारकर्ज़ा और सुसमाचार उपलज़्ध कराने के लिए ही, बल्कि उस प्रचारक तथा सिखाने वाले के लिए भी परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए जो सबसे पहले उसके पास उद्धार का शुभसमाचार लेकर आया था।

उन व्यज़्तिगत गुणों के बढ़ने पर विचार करें जिनसे उसमें ऐल्डर बनने की विशेषताएं आईं: उसके जीवन से ये बातें इसलिए जुड़ीं ज़्योंकि उसे परमेश्वर की ओर से आशीष मिली है। हो सकता है कि वह यह सोचे कि उसने अपने अन्दर ये गुण स्वयं विकसित किए हैं ज़्योंकि वह बाइबल पढ़ता है, परन्तु उसके लिए बाइबल किसने उपलज़्ध करवाई? उसे पढ़ने के योग्य किसने बनाया? उसे वचन को सुनने की सामर्थ किसने दी? हो सकता है कि उसका जीवन भज़्तिपूर्ण इसलिए हो कि उसके माता - पिता परमेश्वर का भय रखने वाले थे; परन्तु उसे माता - पिता किसने दिए? हो सकता है कि उसका आत्मिक विकास अन्य मसीहियों के साथ संगति के कारण हुआ हो, उसे विश्वासी प्रचारकों द्वारा बाइबल की शिक्षा दी गई हो, और मसीही अगुवों की नम्रता से वह कायल हो गया हो। यदि ऐसा है, तो ये आशिषें उसने अपनी क्षमता से नहीं पाई हैं। ये सब आशिषें उसे परमेश्वर की ओर से दी गई हैं! परमेश्वर उन लोगों को आगे लाने के लिए ऐसे साधनों का इस्तेमाल भी करता है जो कलीसिया में अगुआई देने के योग्य हों।

अच्छे परिवार के बिना कोई कलीसिया के ऐल्डर के रूप में सही ढंग से सेवा नहीं कर सकता है। अतिथियों और परिवार की अच्छी तरह देखभाल, बच्चों को ''प्रभु के भय में

अपने वश में रखना'' और कलीसिया के बाहर के लोगों में आदर होना एक अच्छी पत्नी के होने से ही हो सकता है (1 तीमुथियुस 3:2-7)। एक अच्छी पत्नी परमेश्वर की ओर से दान है (नीतिवचन 19:14; 18:22)। इसके अलावा हो सकता है कि किसी आदमी की पत्नी अच्छी तो हो लेकिन उसके बच्चे न हों जिससे, वह एक प्राचीन या ऐल्डर के रूप में सेवा करने के अयोग्य हो जाए (तीतुस 1:6)। बच्चे परमेश्वर की ओर से दान हैं (भजन 127:3) इसके अलावा यदि बच्चे बड़े होकर विश्वासी मसीही बनते हैं, तो उसे परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए; ज़्योंकि वह और उसकी पत्नी तो उनका पालन - पोषण अच्छे ढंग से करने के लिए अपना पूरा ज़ोर लगा सकते हैं और फिर भी वे भटक जाएं। जहां बच्चे विश्वासी हों (माता - पिता की गलतियों के बावजूद) तो यह भी उसकी ओर से ही होता है।

यह अहसास कि लीडरशिप एक दान है कलीसिया में एक लीडर को कैसे प्रभावित करेगा? पहले तो उसे इससे दीन होने में सहायता मिलनी चाहिए। उसने लीडरशिप अर्थात अगुआई करने का गुण अपनी योग्यता से नहीं पाया! उसमें जो भी भलाई है वह परमेश्वर के कारण ही है।

दूसरा, इससे उसे अपनी भूमिका को परिप्रेक्ष्य में रखने की सहायता मिलनी चाहिए। मण्डली में दूसरों के साथ उसका ज़्या सज़्बन्ध है? उसमें एक गुण है: लीडरशिप का गुण। उनमें भी कई गुण हैं, जैसे कि धन कमाने, उत्साह देने, युवकों को चुनौती देने आदि की योग्यता। ये सभी गुण कलीसिया की भलाई के लिए इस्तेमाल होने चाहिए। ज़्या उसका गुण उनसे अधिक महत्वपूर्ण है? हो सकता है कि उसके इस गुण की ओर अधिक लोगों का ध्यान जाता हो, यह अधिक सार्वजनिक हो लेकिन उसका यह गुण दूसरों से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। इससे वह दूसरे लोगों से अधिक अच्छा नहीं हो जाता। हमें अपने मन से उस प्रधान पुरोहित वाले विचार को निकाल देना चाहिए जिसमें कलीसिया के अगुवे एक त्रिकोण के कोने में हैं, जैसे कि दूसरे सदस्यों से ऊंचे जहाज पर बैठे हों।

तीसरा, इससे लीडर को अपने आप से यह पूछना चाहिए, ''यदि परमेश्वर ने मुझे अगुआई का गुण दिया है, तो ज़्या वह यह नहीं चाहता कि मैं इसका इस्तेमाल उसकी महिमा के लिए करूं और हर सज़्भव, कलीसिया में इसका इस्तेमाल करूं?'' परमेश्वर मसीही लोगों को तोड़े देता है ताकि वे उनका इस्तेमाल कलीसिया के लाभ तथा उसकी महिमा के लिए करें।

इस पर विचार करें: यदि परमेश्वर ने किसी आदमी को ऐल्डर होने का गुण दिया है, तो ज़्या उसके लिए ऐल्डर बनने के अवसर से इन्कार करना गलत है?

सारांश

लीडरशिप अर्थात अगुआई करना ''पहले से ठहराए लक्ष्य या उद्देश्य को पूरा करने के लिए निजी लोगों या किसी समूह की समझदारी तथा विवेक से अगुआई करने'' को कहा जाता है। हमेशा की तरह परमेश्वर आज भी अपने लोगों के लिए अगुवे उपलज़्ध करवाता है। कलीसिया में बहुत से लोगों को अगुवे या लीडर होने के लिए बुलाया गया है। ज़्या वे लोग

जिनमें आरम्भिक कलीसिया में अगुआई करने के लिए पौलुस जैसे गुण हैं, कलीसिया की अगुआई करेंगे या अपने लोगों के अगुवे होने के लिए परमेश्वर की बुलाहट को ठुकराएंगे?

पाद टिप्पणियां

[1]इन तथा अन्य परिभाषाओं के लिए, देखें जे. जे. टर्नर, *लीडरशिप एण्ड चर्च ग्रोथ* (श्रेवपोर्ट, ला.: लैज़्बर्ट बुक हाउस, 1976), 9–10. [2]कैनथ ओ. गैंगेल, *लीडरशिप फ़ॉर चर्च एजूकेशन* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1970), 12–13. [3]कर्टिस वॉन, सं. *द न्यू टैस्टामेंट फ्रॉम 26 ट्रांसलेशन्स* (ग्रैंड रेपिड्स, मिशी.: ज़ौन्डर्वन, 1967)। इस पाठ में प्रयुज्त अनुवादों की सूची पृष्ठ 17 पर दी गई है।

संकेत चिह्नों की कुंजी

इस पाठ में दिए गए अनुवादों के संकेत चिह्नों को नीचे दिए कोड से समझा जा सकता है:

Alf-द न्यू टैस्टामेंट (हेनरी फ़ोर्ड)
ASV-द अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्ज़न
Bas-द न्यू टैस्टामेंट इन बेसिक इंग्लिश
Beck-द न्यू टैस्टामेंट इन द लैंग्वेज ऑफ़ टुडे (विलियम एफ़. ज़्लैक)
Ber-द बरकले वर्ज़न ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट (गैरिट वरकुइल)
Con-द ऐपिस्टल्ज़ ऑफ़ पॉल (डज़्ल्यू. जे. कोनिबेयर)
KJV-द किंग जेज़्स वर्ज़न
Knox-द न्यू टैस्टामेंट इन द ट्रांसलेशन ऑफ़ मौनसाइनर रोनल्ड नौज़्स
Mof-द न्यू टैस्टामेंट: ए न्यू ट्रांसलेशन (जेज़्स मौफट)
Mon-द सेन्टिनरी ट्रांसलेशन: द न्यू टैस्टामेंट इन मॉडर्न इंग्लिश (हैलन बार्टलट मौंटगुमरी)
NASB-द न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल
NEB-द न्यू इंग्लिश बाइबल
NIV-द न्यू इंटरनेशनल वर्ज़न
Nor-द न्यू टैस्टामेंट: ए न्यू ट्रांसलेशन (ओलफ़ एम. नौरली)
NRSV-द न्यू रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न
Phi-द टैस्टामेंट इन मॉडर्न इंग्लिश (जे. बी. फिलिप्स)
RSV-द रिवाज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न
Tay-लिविंग लैटर्स: द पैराफ्रेज़्ड एपिस्टल्स; लिविंग गॉस्पल: द पैराफ्रे ज़्ड गॉस्पल्स; लिविंग प्रोफेसिस: द माइनर प्रोफेट्स पैराफ्रेज़्ड एण्ड डेनियल एण्ड द रेवलेशन (कैनथ एन. टेयलर)
TCNT-द टवन्टियथ सैंचुरी न्यू टैस्टामेंट
Wey-द न्यू टैस्टामेंट इन मॉडर्न स्पीच (रिचर्ड फ्रांसिस वेयमाउथ)
Wms-द न्यू टैस्टामेंट: ए ट्रांसलेशन इन द लैंग्वेज ऑफ़ द पीपल (चार्ल्स डी. विलियज़्स)।